International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के आध्यात्मिक मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन।

डॉ0 प्रदीप कुमार मिश्र

शिक्षक–शिक्षा संकाय

Abstract

मानव जीवन में कुछ न कुछ अनुभव अवश्य होते रहते हैं, जो कि समय की गति के साथ–साथ बढ़ते जाते हैं। इन्हीं अनुभवों से कुछ सामान्य सिद्धान्त जन्म लेते हैं, ऐसे सामान्य सिद्धान्तों को जो समस्त जीवन को एक विशिष्ट कला एक दर्शन के रूप में परिवर्तित कर देते हैं, और उसके पथ– प्रदर्शक के रूप में कार्य करते है, 'मूल्यों' अथवा 'वैल्युज' के नाम से जाना जाता है। व्यक्ति अपने जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए जो कुछ आदर्श, विचार तथा वस्तुओं को साधन के रूप में धारण करता है, वे धारण की गयी बातें उसके लिए कुछ मूल्य रखती हैं।

शिक्षा में मूल्य एक बहुआयामी प्रत्यय हैं, जिसका सम्बन्ध शिक्षा के प्रत्येक पक्ष से हैं। जीवन के उद्देश्य शिक्षा के उद्देश्यों पर ही आधारित हैं। अतः शिक्षा के उद्देश्य स्वयं ही मूल्यबद्ध हैं, उद्देश्यों की व्युत्पत्ति मूल्यों से हुई है। प्रत्येक विद्यार्थी के अन्दर आध्यात्मिक गुणों एवं मूल्यों का होना आवश्यक है। आध्यात्मिक गुण जैसे शान्ति, प्रेम, पवित्रता, सत्यता इत्यादि सच्चे मार्गदर्शक की तरह जीवन के प्रत्येक मोड़ पर सदा मार्गदर्शन करते हैं। आध्यात्मिक ज्ञान से मन और बुद्धि पर आन्तरिक अनुशासन स्थापित होता है।

स्वतंत्रता के बाद औद्योगीकरण की तीव्र प्रक्रिया के साथ ही भौतिकता की चकाचौंध में आध्यात्मिक मूल्य का पतन तेजी से हो रहा है। इसका स्पष्ट प्रभाव शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर दिखाई देता है। किसी भी राष्ट्र का निर्माण उसकी कक्षाओं में प्रदान की जाने वाली शिक्षा पर निर्भर करता है। आज के समय में यह सबसे बड़ी आवश्यकता है कि ज्ञान–विज्ञान और तकनीकी विकास के युग में आध्यात्मिक मूल्यों के विकास पर समुचित ध्यान दिया जाय।

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में आध्यात्मिक मूल्य का विशेष स्थान होता है। आध्यात्मिक मूल्य मानव के व्यवहार को प्रभावित करते हैं। व्यक्ति के व्यवहार में नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्य प्रेरणा का कार्य करते हैं तथा किसी के जीवन को लक्ष्य का निर्धारण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस प्रकार आध्यात्मिक मूल्य व्यक्ति के साथ–साथ समाज व राष्ट्र की प्रगति निर्भर करती है। शिक्षा व्यक्ति के विकास तथा उसमें वांछित आध्यात्मिक मूल्यों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और आध्यात्मिक मूल्य शिक्षा को दिशा प्रदान करता है।

आध्यात्मिक मूल्य तार्किक विश्लेषण से दूर होता है। यह एक विश्वास है जो अदृश्य सत्ता के प्रति होता है। जब मनुष्य स्व के भाव से हटकर किसी अन्य चेतना को जानने, उसमें निवास करने या उसके प्रभाव के अधीन होना शुरू कर देता है तो यह आध्यात्मिकता है। आधुनिक काल में कुछ विद्वानों ने आध्यात्मिकता का तात्पर्य ईश्वर की सत्ता से स्वीकार करते है। ईश्वर की सत्ता और आध्यात्मिकता में कुछ समानता हो सकती है परन्तु दोनों अलग–अलग विषय है। आध्यात्मिकता आत्म स्वरूप में प्रतिष्ठित हो जाने को कहते है।

विद्यार्थी का उद्देश्य ज्ञान का अर्जन करना होता है। विभिन्न विषयों के अर्जित ज्ञान से ही उसकी पहचान होती है, परन्तु एक आदर्श विद्यार्थी में ज्ञान के साथ–साथ उसके अन्दर श्रेष्ठ मानसिक गुणों एवं मानवीय मूल्य का होना आवश्यक है। परन्तु विद्यार्थियों का जिज्ञासु एवं कोमल मन संसार की अनेक आकर्षक बुराइयों की ओर आकर्षित हो जाता है। इससे वे अपने उद्देश्य से भटक जाते हैं एवं नशीले पदार्थों के सेवन का शिकार हो जाते है। जीवन के

सबसे ऊर्जावान और कीमती समय को नष्ट कर देते है। आध्यात्मिक एवं मूल्य शिक्षा विद्यार्थियों के जीवन का मार्गदर्शन करके जीवन की मंजिल को सहज बनाती है।

विद्यार्थी के स्वभाव से ही उसके मूल्यों के बारे में पता चलता है कि विद्यार्थी का स्वभाव भिन्न–भिन्न परिस्थितियों में अलग–अलग होता है। इनके मूल्यों के द्वारा ही विद्यार्थी के सभी क्रिया–कलापों के बारे में पता चलता है। हमारी भारतीय संस्कृति प्राचीनकाल से लेकर वर्तमान समय तक मूल्यों को विकास का तत्व माना गया है। आधुनिक परिप्रेक्ष्य में इन्हीं मूल्यों के सहारे आगे बढ़ा जा सकता है। आज भारतीय संस्कृति में पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव पड़ने से हमारे मूल्यों में ह्रास हो रहा है। इन्हीं मूल्यों के ह्रास के कारण आज लूटपाट, मारपीट, घूसखोरी तथा आतंकवाद को बढ़ावा मिल रहा है।मानव का स्वभाव एक दूसरे से भिन्न है और उसमें परस्पर व्यक्तिगत विभिन्नता है। ये विभिन्नताएँ शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रकट होती हैं। आधुनिक युग में जहाँ व्यक्ति के दैनिक जीवन में वैयक्तिक विभिन्नता दृष्टिगत हो रही है वहां समस्त मनोवैज्ञानिक परीक्षणों से विशेष रूप से शैक्षिक क्षेत्र में सहायता लेकर विद्यार्थियों के व्यक्तिगत विचारों, उनकी अभिवृत्तियों एवं उनके मूल्यों का ज्ञान कर उनका उपयोग उचित दिशा में करना शैक्षिक
जीवन में अत्यन्त उपयोगी होगा।

इस शोध मे शोधार्थी ने माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं को सम्मिलित किया हैं। माध्यमिक विद्यालय उच्च प्राथमिक विद्यालय के बाद की संस्था है जिसमें 9, 10, 11 तथा 12 की कक्षाएँ सम्मिलित की जाती हैं। शिक्षा की दृष्टि से यह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कड़ी है, माध्यमिक स्तर से ही छात्रों के कार्य क्षेत्र के भविष्य का निर्माण होता है। यह शैक्षिक जीवन का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण काल होता है। माध्यमिक विद्यालय के उपरान्त छात्र महाविद्यालय में प्रवेश करता है।

समस्या कथन–

प्रस्तुत अध्ययन हेतु समस्या को निम्न शीर्षक दिया गया है–

'' माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के आध्यात्मिक मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन ।''

समस्या के उद्देश्य

अध्ययन समस्या को दृष्टिगत रखते हुये निम्नलिखित उद्देश्य का चयन किया गया है–

1. माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के आध्यात्मिक मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ–

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्यों के आलोक में निम्नलिखित 'शून्य परिकल्पना की रचना की गयी है –

1. माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के आध्यात्मिक मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध–प्रविधि

अध्ययन के लिए सर्वाधिक उपयुक्त विधि के रूप में वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत आने वाली सर्वेक्षण विधि को उपयुक्त पाया। अतः अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान विधि के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में गोरखपुर जिले के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययरत् हिन्दी माध्यम के 100 एवं अंग्रेजी माध्यम के 100 छात्र–छात्राओं को लिया गया है। इस शोध में अध्ययन हेतु यादृच्छिक विधि से न्यादर्श का चयन किया गया है। शोधकर्ता ने निम्न प्रकार से अपनी समस्या से सम्बन्धित माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं का चयन किया गया है।

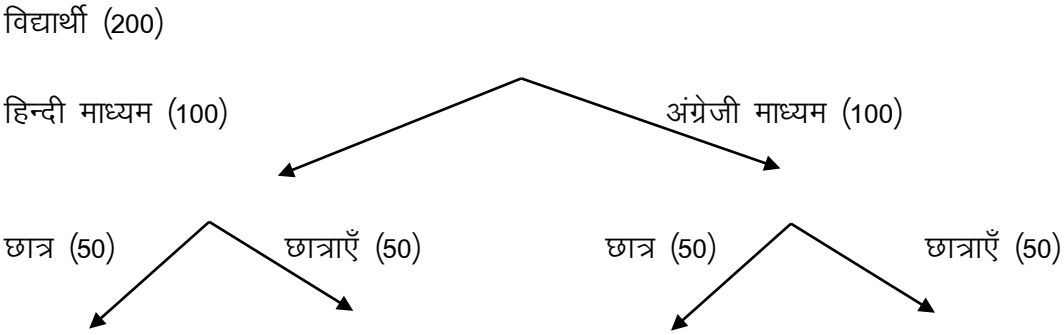

उपकरण– माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के आध्यात्मिक मूल्य का अध्ययन करने के लिए डॉ0 एस0 पी0 गुप्ता का वैयक्तिक मूल्य मापनी का प्रयोग किया गया है जिसमें कुल आठ प्रकार के मूल्यों का विवरण दिया गया हैं। शोधार्थी ने उसमे से आध्यात्मिक मूल्य का ही विशलेषण किया हैं।

प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियाँ–

एकत्रित आँकड़ों के विश्लेषण एवं विवेचन हेतु समस्या की प्रकृति के अनुरूप मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–अनुपात सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों का प्रस्तुतीकरण, विश्लेषण एवं व्याख्या

उद्देश्य– माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के आध्यात्मिक मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन करना।

तालिका –

म

ाध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के आध्यात्मिक मूल्य का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी– अनुपात

क्र0 सं0	समूह	संख्या **(N)**	मध्यमान **(M)**	मानक विचलन **(SD)**	मध्यमानों का अन्तर **(M_1-M_2)**	मानक त्रुटि **(S_{ED})**	टी– अनुपात **(C.R.)**	सार्थकता स्तर एवं सारिणी मान	परिणाम
1	छात्र	100	170.78	11.80	23.09	2.13	10.85	0.05 (1.97)	0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक
2	छात्राएं	100	147.69	17.71					

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि छात्र एवं छात्राओं के आध्यात्मिक मूल्य का मध्यमान क्रमशः 170.78 एवं 147.69 है और मानक विचलन क्रमशः 11.80 तथा 17.71 है। तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट है कि उक्त मध्यमानों में अन्तर के टी– अनुपात (C.R.) का माान 10.85 है जो .05 सार्थकता स्तर पर तालिका मान 1.97 से अधिक है अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। और परिकल्पना अस्वीकार की जाती है । दोनों मध्यमानों पर दृष्टिपात करने से स्पष्ट है कि **माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के आध्यात्मिक मूल्य** में सार्थक अन्तर है। निष्कर्षतः **माध्यमिक स्तर के छात्राओ का आध्यात्मिक मूल्य छात्रों** की अपेक्षा उच्च पाया गया।

निष्कर्ष–

इस प्रकार हम देखते है कि आध्यात्मिक मूल्य के सम्बन्ध में कहा जा सकता है कि यह विद्यार्थी जीवन में बहुत उपयोगी है। ये हमारी शिक्षा सिद्धान्त के मूल तत्त्व है। इन्हें अस्वीकृत नही किया जा सकता है। आध्यात्मिक मूल्य के सन्दर्भ में शोधार्थी द्वारा एक सर्वेक्षण किया गया जिसमे शोधार्थी ने माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के

आध्यात्मिक मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन किया और पाया कि– माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के आध्यात्मिक मूल्य में सार्थक अन्तर है। निष्कर्षतः माध्यमिक स्तर के छात्राओ का आध्यात्मिक मूल्य छात्रों की अपेक्षा उच्च पायी गयी। ऐसा इस कारण हो सकता है कि छात्राए परिवार के अधिकाधिक सम्पर्क में रहती है माता–पिता एवं परिवार के अन्य बरिष्ठ सदस्यों के निकट होने के कारण उनके व्यवहार एवं अन्य विचारों का उन पर अधिक प्रभाव पडता है। माता के सम्पर्क में होने के कारण उनमें माता के आध्यात्मिक विचारों का उन पर व्यापक प्रभाव पडता है। छात्राओं का सामाजिक सम्पर्क कम होने के कारण सामाजिक कुरीतियों से दूर रहना भी आध्यात्मिक मूल्य के उच्च होने का एक कारण हो सकता है। छात्राओं का सरल स्वभाव एवं पूजा–पाठ एवं धार्मिक कार्यो मे अधिक रूचि होना भी आध्यात्मिक मूल्य को बढावा देता हैं। वही छात्रों का समाज के निकट होने के कारण , परिवार में कम समय व्यतीत करने के कारण एवं धार्मिक कृत्यों मे रूचि कम लेने के कारण आध्यत्मिक मूल्य कम पायें गये है। छात्र व्यस्क होते ही स्वयं को माता–पिता से दूर कर् लेता है एवं स्वतंत्र रहना चाहता हैं ऐसे में परिवारिक वातावरण का उस पर कम प्रभाव दिखता हैं। हमारे देश का दुर्भाग्य है कि पाश्चात्य भौतिकवादी संस्कृति को बढ़ावा मिल रहा है। पाश्चात्य संस्कृति का न कोई मानक है और न ही जीवन जीने का दृष्टिकोण है। हमारे नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्य सर्वश्रेष्ठ है। इसे बनाए रखने की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1ण डॉ0 हृदय नारायण मिश्र– 'उन्नत नीतिशास्त्र', शेखर प्रकाशन, इलाहाबाद (2000), पृ0 99
2ण प्रो0 संगमलाल पाण्डेय– 'नीतिशास्त्र का सर्वेक्षण'', सेन्ट्रल पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद (1991), पृ0 10
3ण शुक्रनीति 1.56 – नयनान्नीतिरुच्यते, कामन्दकीय नीतिसार 2.15
4ण हितोपदेश 2.75 – विपन्नायां नीतौ सकलमवशं सीदति जगत् ।?
5ण 'इंटरनेट से प्राप्त सूचना।
6ण वर्मा, प्रीति एवं श्रीवास्तव, डी0एन0, (2004) : **मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सांख्यिकी**, आगरा,विनोद पुस्तक मंदिर।
7ण सरीन एवं सरीन, (1977) : **शैक्षिक अनुसंधान विधिया**, आगरा–2, विनोद पुस्तक मन्दिर।
8ण सारस्वत, मालती, (1984) : **शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा**, लखनऊ, आलोक प्रकाशन।